

मनसा सेवा - 75

अव्यक्त बापदादा :- (30.03.99)

➤ ➤ सभी बच्चे पूछते हैं कि इस साल क्या सेवा करें? तो बापदादा पहली सेवा यही बताते हैं कि अभी समय अनुसार सभी बच्चे वानप्रस्थ अवस्था में हैं, तो वानप्रस्थी अपने समय, साधन सभी बच्चों को देकर स्वयं वानप्रस्थ होते हैं। तो आप सभी भी अपने समय का खजाना, श्रेष्ठ संकल्प का खजाना अभी औरों के प्रति लगाओ। अपने प्रति समय, संकल्प कम लगाओ। औरों के प्रति लगाने से स्वयं भी उस सेवा का प्रत्यक्षफल खाने के निमित्त बन जायेंगे।

➤ ➤ मनसा सेवा, वाचा सेवा और सबसे ज्यादा - चाहे ब्राह्मण, चाहे और जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं उन्हीं को कुछ न कुछ मास्टर दाता बनके देते जाओ। निःस्वार्थ बन खुशी दो, शान्ति दो, आनंद की अनुभूति कराओ, प्रेम की अनुभूति कराओ। देना है और देना माना स्वतः ही लेना। जो भी जिस समय, जिस रूप में सम्बन्ध-सम्पर्क में आये कुछ लेकर जाये। आप मास्टर दाता के पास आकर खाली नहीं जाये।

➤ ➤ जैसे ब्रह्मा बाप को देखा - चलते-फिरते भी अगर कोई भी बच्चा सामने आया तो कुछ न कुछ अनुभूति के बिना खाली नहीं जाता। यह चेक करो जो भी आया, मिला, कुछ दिया वा खाली गया? खजाने से जो भरपूर होते हैं वह देने के बिना रह नहीं सकते। अखूट, अखण्ड दाता बनो। कोई मांगे, नहीं। दाता कभी यह नहीं देखता कि यह मांगे तो दें। अखुट महादानी, महादाता स्वयं ही देता है।

➤ ➤ समय का खजाना

➤ ➤ सम्बंध सम्पर्क में जो भी आए मास्टर दाता बन कर देते जाओ

→ सम्बंध सम्पर्क में जो भी आए कुछ न कुछ लेकर जाए।

■ अलबेलेपन की नींद में जो सोए है उन्हे भी जगाओ।

➤ ➤ सबसे मुश्किल काम क्या है ??

→ समय देना

→ अपने लिए बहुत कुछ करना है

→ बहुत लम्बी लिस्ट है ये भी करना है ये भी करना है

➤ ➤ दूसरो को समय देना और श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना देना है

→ ये बहुत बड़ा काम है

■ खुशी की शांति की प्रेम की सुख की अनुभूति करानी है

➤ ➤ समय का खजाना और संकल्प का खजाना औरों के प्रति लगाना

है

→ अपने प्रति कम लगाना है

→ महादाता महादानी बनना है

➤ ➤ चाहे मनसा चाहे वाचा चाहे कर्मणा औरों के प्रति लगाओ।

→ हमने जो कुछ खजाने जमा किए दूसरो के लिए किए

→ जो ज्ञान रत्न व अनुभव हमारे पास है जो भी है हमें दूसरों के

प्रति लगाने पड़ेंगे।

→ एक समय आयेगा जब हमें अपने प्रति बिल्कुल समय नहीं

मिलेगा

■ अभी अपने पुरुषार्थ के लिए हमारे पास समय है

■ अभी हम जो भी मुरली पढ़ते हैं चिंतन करते हैं मनन

करते हैं योग करते हैं

■ एक समय आयेगा तुरंत आ चुका है आ रहा है आयेगा ।

■ सब के लिए आ चुका है

» _ » सब को वानप्रस्थ जाना है

→ सब कुछ सौंप देना है दूसरों को टाइम देना है

→ दूसरों के प्रति समय संकल्प लगाना है

→ दूसरों को अनुभव हो कि ये अब कुछ और है

» _ » अब वो समय है स्व पुरुषार्थ स्व स्टडी योग सब कुछ अपने लिए। अब

हम अपने लिए भी कर रहे हैं और दूसरों के लिए भी

→ एक समय आयेगा सब कुछ उनके लिए करना पड़ेगा।

→ फिर अपने लिए कोई समय नहीं मिलेगा बस सकाश

» _ » चाहे जब भी कोई काम दूसरों के लिए करते हैं चाहे हमारे पास समय न हो समय निकालकर कर दें तो हमें अज्ञात सा आनन्द अनुभव होता है

»» संकल्पों का खजाना

» _ » समय का खजाना और श्रेष्ठ संकल्पों का खजाना औरों के प्रति

लगाने से स्वयं भी उस सेवा के प्रयत्न फल खाने के निमित्त बन जायेंगे

→ खुशी का अनुभव होता है

» _ » औरों के लिए टाइम लगाते तो खुद के लिए टाइम बढ़ जायेगा

» _ » मनसा सेवा वाचा सेवा करते जो भी भी सम्बंध सम्पर्क में सामने

आए उस को कुछ न कुछ दे दो

→ एक शुभ संकल्प ही दे दो इसका कल्याण हो जाए

→ ये बाप को जान ले हमारा एक शुभ संकल्प कितना महत्वपूर्ण है

→ एक छोटा सा संकल्प ये तीव्र पुरुषार्थी बन जाए

→ इसका अमृतवेला शक्तिशाली हो जाए

→ इसकी जो तपस्या है और गहन हो जाए

→ ये छोटा सा संकल्प ये व्यर्थ से मुक्त हो जाए

» _ » वातावरण में व्यर्थ फैलाना ये सबसे बड़ा विघ्न है यज्ञ में

→ एक दूसरे को दोषी ठहराना ये वातावरण को तेजी से नष्ट

करता है

→ दोष देना आरोपित करना ये ब्लेम गेम सबसे बड़ा विघ्न है

» _ » **हरेक के प्रति शुभ भाव हो**

→ कोई कैसा भी हो बहुत अच्छा है बहुत अच्छा है।

» _ » **निस्वार्थ बन खुशी दो**

→ कैसे बने निस्वार्थ ??

→ कितना मुश्किल काम है ??

- भाषण देने के लिए सहज है

- लिखने के लिए सहज है

- दूसरो को सिखाने के लिए सहज है

- दूसरो को वरदान देने के लिए बहुत सहज है निस्वार्थ

सेवाधारी भव

» _ » **ये संकल्प कि हमे बनना है बना देगा**

→ ये संकल्प ही काफी है कि मुझे करना है

→ विधि यही है तो बना देगा

» _ » **आनन्द की प्रेम की अनुभूति कराओ कोई खाली न जाए।**

» _ » **अखूट दाता बनना है**

→ **उसके लिए स्वयं को भरना है**

» _ » **कोई गलती करता है तो कैसे टूट पडते है उसको पकड लेते है**

→ शुभ भावनाओ का स्टाक कम है।
